"सहज-पथ"

परमधार में उतरकर,

जीति लेव संसार ।

जीव भी परमातम बने,

यही लक्ष्य यही सार ।।

अचल, धार, अद्वैत है,

सहज, अलोक, अनाम ।

काम, लोभ मद छोड़ि के,

होव समर्पित राम ।।

देव, ब्रह्म और मन, सुरत,

लोक और इन्द्रिय ज्ञान ।

योग, भक्ति सब द्वैत है,

मिले न पद निर्वाण ।।

मनमुख, गुरुमुख, वेदमुख,

कौन है सबसे श्रेष्ट ।

सन्मुख धार के, सन्त वह,

संत है सबसे श्रेष्ट ।।

वाचक, पाठी, वेदमुख,

गुरुमुख, भजन और ध्यान ।

सबकी जो पूजा करे,

मनमुख, ताको जान ।।

इन्द्रिय, मन और सुरत से,

मिलते तत्व हैं द्वैत ।

सहज और सन्मुख से मिले,

है अतत्व, अद्वैत ।।

मछली चढ़ती धार मुँह,

उससे चढ़ना सीख ।

धार के सन्मुख, सत्यपथ,

सन्मुख होना सीख ।।

सन्मुख होना सहज से,

सहज है मन का शून्य ।

भाव, विचार स्थिर करो,

तीन लोक से भिन्न ।।

सु-मन, सु-मति, विवेक कर,

तब उतरौ संसार ।

कार्य पूर्ण सब तुरत हो,

माया, भव से पार ।।

सु-मन, सु-मति विवेक सब,

खुद ही सब होय जाय ।

सन्मुख होना धार के,

बूँद, सिन्धु बनि जाय ।।

"अद्वैत"

एक अकेला जो रहै,

दूजा नहीं हो पास ।

सबसे न्यारा वही है,

वही है खुद के पास ।।

लोक, तत्व से भिन्न है,

परिवर्तित नहिं होय ।

अचल, अरूप, अनाम है,

वह अद्वैत ही होय ।।

जानो उसको जो एक है,

फंसे हो जाल अनेक ।

जहाँ है दूजा, वहाँ नहिं,

अद्वैत है केवल एक ।।

जहाँ दूसरा कोई हो,

हो गये उससे दूर ।

दो से होना है अलग,

हुआ अलग वह सूर ।।

मिथ्या, ध्यान और भजन है,

मिथ्या योग और भक्ति ।

इनसे वह मिलता नहीं,

नहीं हो इनसे मुक्ति ।।

सात लोक सब चल रहे,

चल रही है हर वस्तु ।

सात स्वर्ग भी चल रहे,

एक अचल अद्वैत।।

सन्मुख होकर दर्शन कर ले,

मिटे करम का खेद ।

राधास्वामी, रक्षक जीव के,

जीव न जाने भेद ।।

मारा- मारा, दर- दर फिरता,

मिले नहीं अवलम्ब ।

तू पकड़े अद्वैत को,

वही सत्य अवलम्ब ।।

सद्गुरु धार सत्य को खोजो,

लोक, तत्व बिसरायी ।

स्वयं घटित वह, परम सत्य है,

क्रिया कर्म बिन पायी ।।

चार चरण अध्यात्म के,

जानो सबका सार ।

सार सभी का प्राप्त कर,

घटित करौ वह धार ।।

प्रथम चरण में ज्ञान सब,

चरण दूसरे ध्यान ।

चरण तीसरे भजन है,

चौथा पद निर्वाण ।।

तब तक खोजो सत्य को,

मिले न अचल अरूप ।

केवल पकड़ो सत्य को,

और हैं माया रूप ।।

जन्म, मरण के बीच का,

ज्ञानी करें विचार ।

जीव सुखी किस तरह हो,

कैसे हो भव पार ।।

कथा जीव की जान लो,

कैसी परम विचित्र ।

जीव को मिलना परम से,

जिसके बने न चित्र ।।

“धरा” जीव की जान लो,

जीव का जानो “धाम” ।

कैसे पहुँचे धाम तक,

जीव बने सतनाम ।।

पृथ्वी, धरा शरीर की,

जीव की धरा है देंह ।

धाम शरीर का गगन है,

जीव का धाम विदेंह ।।

जीव जो बदले दृष्टि को,

सहज दृष्टि को धार ।

देव, ब्रह्म सब छोड़कर,

उतरै भव से पार ।।

"सन्मुख"

सन्मुख, सन्मुख कहें सब,

सन्मुख, जाने नहिं कोय ।

जहाँ, जहाँ यह जाय मन,

मन के सन्मुख सोय ।।

नारी में यदि मन लगा,

सन्मुख मन के नारि ।

जहाँ, जहाँ यह जाय मन,

सन्मुख लेव बिचारि ।।

पोथी में यदि मन लगा,

सन्मुख पोथी के मान ।

मूरत में यदि मन लगा,

सन्मुख मूर्ति के जान ।।

ध्वनि है रूप सुरत का,

निरत का रूप प्रकाश ।

अग्नि है तत्व प्रकाश का,

ध्वनि का तत्व आकाश ।।

सुरत, निरत में मन लगा,

सन्मुख इनके होय ।

सबसे मन को हटायकर,

स्थिर, सम करि लेव ।।

स्थिर दोनों रूप हो,

मूल सुरत ठहराय ।

दृष्टि सुरत की सम करो,

घट परगट होय जाय ।।

घट पर गिरती धार जो,

यही है अचल अरूप ।

जीव, धार ही हो गया,

तुरत हो गया भूप ।।

पहले तुम सत्संग सुनो,

सद्गुरु धारण करि लेव ।

गुप्त भेद को जानकर,

घट परगट करि लेव ।।

यही था तुमको खोजना,

खोज हो गयी पूर्ण ।

मन भी पूरण हो गया,

लक्ष्य, तत्व सब पूर्ण ।।

-------o--------

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)